विचार और संस्कृति का मासिक

# समयांतर

ISSN 2249 - 0469

असहमति का साहस और सहमति का विवेक

दिसंबर, 2024 www.samayantar.com वर्ष : 56, अंक : 12 मूल्य : 30 रुपए

## कानूनी पेंच और मुस्लिम अस्मिता

**कमलानंद झा**

•

## महिलाओं का सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण

**अराधना शर्मा और कुलदीप पुरोहित**

इस अंक में

साहित्य बचेगा कब तक!
- रंजीत वर्मा

•

भारतीय जेलें : गरिमा की लड़ाई
- सौम्या जैन

•

उत्तराखंड में दलित नेतृत्व
- अरुण कुकसाल

•

मणिपुर में तार्किक आवाज
- रॉकिबुज जमान

•

निर्वाचिक अधिनायकवाद की छाया
- रामशरण जोशी

•

पीढ़ियां सुनेंगी हमारे कदमों की आवाज
- गुरबख्श सिंह मोंगा और विजय शर्मा

•

कला में बुर्जुआ समाज का दबाव
- गोपाल नायडू

•

दलित-मुस्लिम एकता की आवाज
- अभय कुमार

•

ऊंचे पहाड़ों पर देवता नहीं चरवाहे वास करते हैं!
- चंद्रकला

# समयांतर

**स्थापना वर्ष : 1970**
**पुनर्प्रकाशनः अक्टूबर, 1998**

**ISSN 2249-0469**

संपादकः **पंकज बिष्ट**

व्यवस्थाः **ठाकुर प्रसाद चौबे**
टाइपसेटः **राधा**

**चंदे की दरें**
सामान्यः एक वर्षः रु. 350, दो वर्षः रु. 600
तीन वर्षः रु. 850, पांच वर्षः रु. 1350
मित्रः एक वर्षः रु. 500, दो वर्षः रु. 800
तीन वर्षः रु. 1000, पांच वर्षः रु. 1500

रजि. डाक से रु. 400 वार्षिक (अतिरिक्त)

**विशेष दरें**
छात्र : एक वर्षः रु. 250, दो वर्षः रु. 350 (प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने पर)
संस्थाओं के लिएः एक वर्षः रु. 500.00 (रजिस्टर्ड डाक से मंगवाने के लिए एक वर्ष के कृपया रु. 400 अतिरिक्त भेजें।)

**विशेष सहयोग**
आजीवनः **दस हजार रुपए**
दस वर्षः **पांच हजार रुपए**
**बैंक के माध्यम से शुल्क भेजने के लिए**
Samayantar Current aéc
No. 27520200000094
IFSCcode: BARB0MAYVIH
Bank of Baroda, Mayur Vihar Ph.-I,
Delhi-110091

कृपया रेमिटेंस की सूचना तत्काल ईमेल अथवा एस.एम.एस से दें।
समयांतर, 79-ए, दिलशाद गार्डन, दिल्ली-110095
फोन नं. 9667685659 (संपादकीय)
9810636082 (व्यवस्था)

**email:**
samayantar@yahoo.com
samayantar.monthly@gmail.com

**नोटः** *समयांतर* से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे।


# इस अंक में

**दिसंबर, 2024, वर्षः 56, अंकः 12**


संपादकीय

**5. गोडसे की वापसी का दौर**

समाचार संदर्भ

**6. वीरचक्र रफीक खान ग्रेनेडीयर** -मईनुदीन कोहरी 'नाचीज बीकानेरी'
**6. बड़ी यानी आवारा पूंजी के उत्सव और साहित्यकार**
**7. भगत सिंह स्मारक** -गुरमीत

विचार

**8. कानूनी पेंच और मुस्लिम अस्मिता** -कमलानंद झा
**11. भारतीय जेलों में गरिमा की लड़ाई** -सौम्या जैन
**12. उत्तराखंड में दलित नेतृत्व एवं विमर्श** -अरुण कुकसाल
**16. मणिपुर में तार्किक आवाजों को दबाया जा रहा है!** -रॉकिबुज जमान
**18. निर्वाचिक अधिनायकवाद की छाया** - रामशरण जोशी
**20. मध्यवर्ग की पाखंडपूर्ण स्थिति** - साभार : नागरिक
**22. सत्ता संस्कृति और समाज का अंतर संबंध** -सुमित पी.वी. और अश्वती पी.पी.
**28. विविध सहायता के माध्यम से महिलाओं का सामाजिक और राजनीतिक सशक्तिकरण** -अराधना शर्मा और कुलदीप पुरोहित
**32. आरक्षण विरोध की राजनीति और मीडिया** - शिव दास

साहित्य और संस्कृति

**35. साहित्य बचेगा कब तक!** -रंजीत वर्मा
**37. पीढ़ियां सुनेंगी हमारे कदमों की आवाज** -गुरबख्श सिंह मोंगा और विजय शर्मा
**40. कला में बुर्जुआ समाज का दबाव** -गोपाल नायडू
**44. सवालों में असगर वजाहत-नरेश मेहता के इस्तीफे** -जयप्रकाश जय और कविता कृष्ण पल्लवी

निधन

**45. दलित-मुस्लिम एकता की आवाज** -अभय कुमार
**45. ऊंचे पहाड़ों पर देवता नहीं चरवाहे वास करते हैं!** -चंद्रकला
**48. एक ही धुन है कि इस रात को ढलता देखूं** -खान अहमद फारुक
**49. भौतिकी में नोबेल और '78 डिग्री** -अरुण कुमार असफल

**कविता** : विजय गौड, आवरण-2


आवरण

*19वीं सदी का चर्च जिसे बेगम समरू ने अपने फ्रांसीसी प्रेमी की स्मृति में बनवाय*

फोटोः **पंकज बिष्ट**

निधन

# दलित-मुस्लिम एकता की आवाज

अभय कुमार

**बी. टी. राजशेखर** (1932 - 20 नवंबर, 2024) *की सबसे बड़ी चिंता जाति-आधारित असमानता को समाप्त करने और वंचित वर्गों के बीच एकता स्थापित करने की थी। इस उद्देश्य से उन्होंने दलितों और मुसलमानों को एक मंच पर लाने का भरपूर प्रयास किया।*

दलितों, आदिवासियों, पिछड़ी जातियों और अल्पसंख्यकों की सशक्त आवाज, बी.टी. राजशेखर, अब हमारे बीच नहीं रहे। 20 नवंबर को मैंगलोर के एक अस्पताल में उनका निधन हो गया। वह 93 वर्ष के थे। पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका अनुभव छह दशकों से भी अधिक का था। वे एक विचारधारा-संपन्न पत्रकार थे और दलित वॉयस पत्रिका के संस्थापक और संपादक के रूप में जाने जाते थे। देश के प्रमुख अंग्रेजी समाचार पत्रों में दो दशक तक काम करने के बाद,राजशेखर ने यह महसूस किया कि ये संस्थाएं केवल ब्राह्मणवादी जातियों के हितों की सेवा करती हैं। उन्होंने देखा कि देश की मुख्यधारा का मीडिया कमजोर, पीड़ित और उत्पीड़ित वर्गों की समस्याओं को केवल दिखावे के लिए उठाता है। इस देश में कोई दलित या आदिवासी राष्ट्रपति तो बन सकता है, लेकिन किसी राष्ट्रीय अखबार का संपादक नहीं बन पाता। सत्ताधारी वर्ग भली-भांति जानता है कि मीडिया में उसका हित कौन सी जातियां साध सकती हैं। ये वही कटु सच्चाइयां थीं, जिन्होंने राजशेखर को बहुजन मीडिया के निर्माण और सशक्तिकरण की ओर प्रेरित किया।

कुछ लोगों को यह गलत फहमी है कि बी.टी. राजशेखर का जन्म एक दलित परिवार में हुआ था। सच्चाई यह है कि उनका जन्म सन 1932 में कर्नाटक के एक शेट्टी समुदाय में हुआ, जो एक पिछड़ी जाति से संबंधित है। उनके पिता एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी थे, और उनके शुरुआती जीवन में जाति आधारित भेदभाव का सामना नहीं करना पड़ा। हालांकि, जब उन्होंने राष्ट्रीय मीडिया में प्रवेश किया, तो उन्होंने ब्राह्मणवादी व्यवस्था को करीब से देखा। अपने कालेज के दिनों में राजशेखर मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित थे। वह वर्ग संघर्ष पर जोर देते थे और उन्होंने कपड़ा मिलों के श्रमिकों के बीच काम किया। उनका मानना था कि वर्ग संघर्ष के जरिये सामाजिक शोषण से मुक्ति संभव है। लेकिन जब उन्होंने मीडिया और बाहरी दुनिया में ब्राह्मणवादी प्रभुत्व को देखा, तो उनका दृष्टिकोण बदलने लगा। उन्हें यह समझ में आया कि भारत में जाति के खिलाफ संघर्ष ही असल में वर्ग संघर्ष है। धीरे-धीरे राजशेखर कार्ल मार्क्स के विचारों से दूर होकर डा. अंबेडकर, पेरियार और राम मनोहर लोहिया के विचारों के करीब आते गए। इसका असर उनके लेखन और विचारों में स्पष्ट दिखने लगा। लेकिन उनके ये विचार अखबार मालिकों को पसंद नहीं आए, और अंततः उन्हें *इंडियन एक्सप्रेस* से निकाल दिया गया। इस कठिन समय में, मशहूर अंग्रेजी लेखक मुल्कराज आनंद ने उनकी मदद की। आनंद ने न केवल उन्हें अंग्रेजी में *दलित वॉयस* नामक पत्रिका प्रकाशित करने का सुझाव दिया, बल्कि वित्तीय सहायता भी प्रदान की। इस प्रकार, 1981 में *दलित वॉयस* का पहला अंक प्रकाशित हुआ। अंग्रेजी में प्रकाशित इस पत्रिका के लेख अन्य भाषाओं में भी अनुवादित किए जाते थे।

सीमित संसाधनों के बावजूद, *दलित वॉयस* न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी लोकप्रिय हो गई। खासतौर पर मुस्लिम देशों में इसके अंकों का बेसब्री से इंतजार किया जाता था। राजशेखर की यह यात्रा केवल पत्रकारिता की नहीं, बल्कि सामाजिक संघर्ष का एक अमूल्य अध्याय है। राजशेखर की निर्भीक पत्रकारिता और उनकी गहरी राजनीतिक अंतर्दृष्टि *दलित वॉयस* की सफलता का मुख्य कारण थीं। कभी उन्होंने इस की परवाह नहीं की कि उनकी पत्रिका किसे प्रसन्न या अप्रसन्न कर रही है।

उनके अल्पसंख्यकों के साथ गहरे और प्रगाढ़ रिश्ते इस बात से साफ झलकते हैं कि दलित वॉयस का प्रकाशन एक ईसाई चर्च द्वारा किया जाता था। लेकिन जातिवादी सांप्रदायिक ताकतों ने चर्च को धमकियां दीं, जिसके कारण चर्च को मजबूर होकर पत्रिका का प्रकाशन रोकना पड़ा। यही नहीं, भगवा संगठनों ने शहर के अन्य प्रिंटिंग प्रेसों को भी डराकर *दलित वॉयस* का प्रकाशन बंद कराने की कोशिश की। कठिनाइयों और बाधाओं से लड़ते हुए, *दलित वॉयस* तीन दशकों तक सफलता पूर्वक प्रकाशित होती रहा। हालांकि उनके खिलाफ कई मामले दर्ज कराए गए, राज्य मशीनरी का दुरुपयोग करते हुए उन्हें गिरफ्तार किया गया, और उनका पासपोर्ट 20 वर्षों के लिए जब्त कर लिया गया ताकि वह विदेश जाकर बहुजनों की आवाज न उठा सकें।

राजशेखर एक अदम्य साहसी पत्रकार थे। तमाम मुश्किलों के बावजूद उन्होंने न केवल *दलित वॉयस* का संपादन जारी रखा, बल्कि सौ से अधिक पुस्तकों के माध्यम से बहुजनों के मुद्दों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर रखा। राजशेखर की सबसे बड़ी चिंता जाति-आधारित असमानता को समाप्त करने और वंचित वर्गों के बीच एकता स्थापित करने की थी। इस उद्देश्य से उन्होंने दलितों और मुसलमानों को एक मंच पर लाने का भरपूर प्रयास किया।

उनका मानना था कि भारत के अधिकांश मुसलमान मूलतः दलित हैं, जिन्होंने जाति-आधारित शोषण से बचने के लिए इस्लाम को अपनाया। उनका विचार था कि दलितों और मुसलमानों के बीच "खून का रिश्ता" है। दोनों समुदायों के खान-पान और जीवनशैली में अद्भुत समानताएं हैं। साथ ही, दोनों जाति-आधारित असमानता के शिकार हैं। राजशेखर इस्लाम को गरीबों और उत्पीड़ितों का धर्म मानते थे। उन्होंने एस.के. बिस्वास की पुस्तक (*दलित एंड मुस्लिम एज ब्लड ब्रदर्स* ) की प्रस्तावना में यह विचार स्पष्ट किया। उन्होंने लिखा, "इस्लाम एक इंकलाबी मजहब है। यह अमीरों का धर्म नहीं है। यह मुख्यतः गरीबों और उत्पीड़ित जनता का धर्म है।"(पृष्ठ 9)। इस अभियान में राजशेखर के 'सबसे बड़े समर्थक' मौलाना अबुल हसन

अली नदवी थे, जिन्होंने बैंगलोर में आयोजित एक कार्यक्रम में *दलित वॉयस* का विमोचन किया था। हालांकि, वी.टी. राजशेखर ने दलित-मुस्लिम एकता को मजबूत करने का प्रयास किया, लेकिन उन्होंने इस बात पर गहरा अफसोस जताया कि शीर्ष मुस्लिम नेतृत्व, जिसमें धार्मिक कायदे-कानून बनाने वाले शामिल हैं, दलितों को साथ लाने के लिए गंभीर कदम उठाने में असफल रहा है। उन्होंने शिकायत की कि उत्पीड़ितों के साथ खड़े होने के इस्लाम के संदेश को मुस्लिम नेतृत्व ने गहराई से नहीं अपनाया। इसके विपरीत, ये नेता ब्राह्मणवादी नेतृत्व के करीब जाने को अधिक आतुर दिखे, जबकि दलितों और अपने समाज के गरीब तथा पीड़ित मुसलमानों के प्रति उनकी कोई विशेष रुचि नहीं दिखी।

राजशेखर ने सांप्रदायिकता के सवालों पर भी गहरी अंतर्दृष्टि प्रस्तुत की। उन्होंने यह स्वीकार किया कि कुछ सांप्रदायिक दंगों में ब्राह्मणवादी ताकतों ने मुसलमानों के खिलाफ दलितों और आदिवासियों का इस्तेमाल किया। लेकिन उन्होंने मुस्लिम नेतृत्व को इस बात के लिए जिम्मेदार ठहराया कि वे इस साजिश को पहचानने में असफल रहे। राजशेखर का मानना था कि ब्राह्मणवादी ताकतों का असली उद्देश्य दलितों और मुसलमानों के बीच सामाजिक दूरी बनाए रखना है। इसलिए उन्होंने मुस्लिम नेतृत्व से आग्रह किया कि वे दलितों को दोषी ठहराने के बजाय पूरे परिप्रेक्ष्य को समझें और उन परिस्थितियों को सुधारने का प्रयास करें, जो दोनों समुदायों के बीच विभाजन पैदा करती हैं। उनका मानना था कि जहां भी दोनों समुदायों के बीच मतभेद उत्पन्न हों, उन्हें संवाद के माध्यम से हल किया जाना चाहिए। राजशेखर बार-बार जोर देते थे कि वंचित वर्गों के नेताओं का यह कर्तव्य है कि वे दलित-मुस्लिम एकता की राह में आने वाली बाधाओं को दूर करें। उनकी अपील थी कि मुस्लिम समुदाय के ऊपरी पांच प्रतिशत तबके और धार्मिक नेतृत्व को दलितों के साथ एकजुटता दिखाने के लिए आगे आना चाहिए। ऐसी पहल दलित नेतृत्व की तरफ से भी होनी चाहिए।

वी.टी. राजशेखर के जीवन और उनकी पत्रकारिता का संदेश स्पष्ट है। सत्ताधारी जातियों और वर्गों के साथ समझौता करने से वंचित समाज का भला नहीं हो सकता। ■